International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 17-08-2021, Accepted: 02-09-2021, Published: 18-09-2021
Volume 6, Issue 3, 2021, Page No. 63-76

भारत रूस संबंध: आजादी से वर्तमान तक के घटनाक्रमों का एक विश्लेषण

डॉ. अनुराग पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, दयाल सिंह कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश

आजादी से पहले से ही भारत एवं तत्कालीन सोवियत संघ के सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ रहे हैं। रूस ने भारत को कई क्षेत्रों में विकास करने में काफी मदद करि है, जिनमें सैनिक सहयोग, अस्त्र शस्त्र का व्यापर, आधुनिक तकनीक का आदान प्रदान, इत्यादि दोनों देशो के मध्य आपसी समझौते के महत्वपूर्ण बिंदु रहे हैं। जब सोवियत संघ का विघटन होता है तब भारत उसकी मदद के लिए आगे आता है। कुल मिलाकर दोनों देशो के मध्य सम्बन्ध विदेश नीति से आगे एक मित्र की तरह रहे है। हाल के वर्षो में भारत रूस सम्बन्ध में एक ठहराव आया है, भारतीय उपमहाद्वीप में चीन की विस्तारवादी नीति और पाकिस्तान के रवैये की वजह से भारत को अन्य देशों से निकटता बनाने की मजबूरी आई है, जिनमें भारत के अमेरिका एवं अन्य देशों से सम्बन्ध महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर रूस पाकिस्तान और चीन के निकट जाने का प्रयास क्र रहा है। भारत रूस से अभी भी दोगुनी बड़ी अर्थव्यवस्था है और रूस खुद भारत जैसे खरीदार को खोना नहीं चाहेगा खासतोर से उस दौर में जब आत्मनिर्भर होता चीन रूस से हथियारों का आयात कम कर रहा है और कच्चे तेल के अतर्राष्ट्रीय बाजार में गिरते दाम रूस की आर्थिक स्थिति के लिए अच्छे संकेत नहीं दे रहे। वहीं दूसरी ओर भारत अपने नये मित्रों पर संकट की घड़ी में समर्थन का भरोसा नही कर सकता, रूस आज भी भारत के साथ ज्यादा मजबूती से खड़ा नजर आता है। अतः दोनों देशों को अपने इतिहास को देखते हुए एक साथ खड़े रहने की जरूरत है, आपसी विश्वास को और मजबूत करने की जरूरत है।

मूलशब्द: विदेश नीति, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, मास्को घोषणापत्र, यूरेनियम आपूर्ति, परमाणु सहयोग, अस्त्र-शस्त्र एवं तकनीकी सहयोग, पाकिस्तान, चीन और रूस

प्रस्तावना

दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात् विश्व दो महाशक्तियों एवं उनकी विचारधारा में बंट गया था, जिनमे साम्यवादी राज्यों का नेतृत्व सोवियत संघ तथा पूंजीवादी राज्य अमेरिका के करीबी बन गये थे। उस दौर में भारत ने अपनी विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता के आधार पर परिभाषित किया और इन दोनों में से किसी भी शक्ति के साथ न मिलकर तृतीय विश्व के राष्ट्रों को साथ लेकर गुटनिरपेक्ष आन्दोलन चलाया जिसका तात्पर्य किसी भी गुट के साथ ना रहते हुए तटस्थता कि नीति अपनाकर अपने देश का विकास करना था, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में मुख्यतः विकासशील देश सम्मिलित थे। भले ही भारत ने उस दौर में गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया लेकिन रूस के साथ भारत के संबंध अच्छे थे एवं इस अच्छे

संबंधो के पीछे कई राजनीतिक एवं आर्थिक कारण थे। सोवियत संघ ने भारत को एक ऐसे समय में सबसे ज्यादा मदद की जब भारत को नई आजादी मिली थी उस दौर में भारत के पास पर्याप्त खाद्यान तक नहीं थे, आर्थिक रूप से अपंग था, उधोग के क्षेत्र में पिछड़ा था एवं विज्ञानं और तकनीक के मामले में कई देशों से पिछड़ा हूआ था। रूस ने ऐसे समय में भारत की आर्थिक व सामरिक रूप से भरपूर मदद की। भारत रूस सम्बन्धों की शुरुआत 1955 में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु और सोवियत रूस के नेता ख्रुश्चेव के भारत दौरे के बाद हुई।

सोवियत संघ ने अतर्राष्ट्रीय स्तर पर कश्मीर विवाद में भारतीय पक्ष का पूर्ण समर्थन किया एवं जरूरत पड़ने पर कई बार आर्थिक व सैन्य सहायता भी दी।

1965 के भारत पाक युद्ध में रूस ने मध्यस्था कर दोनों देशों के मध्य युद्धोत्तर ताशकंद समझौता करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत एवं सोवियत संघ ने अगस्त 1971 में शान्ति, मित्रता एवं सहयोग सम्बन्धी एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके फलस्वरूप भारत को 1971 में भारत पाक युद्ध (बांग्लादेश युद्ध) में काफी सहायता मिली। भारत ने भी राष्ट्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोवियत संघ की कई नीतियों का समर्थन किया। उदहारणस्वरुप सन 1979 में जब रूस ने अफगानिस्तान पर हमला किया, तब भारत ने सोवियत संघ की इस कार्यवाही का पूर्ण समर्थन किया।

किन्तु दिसम्बर 1991 में विघटन के कारण सोवियत संघ की स्थति अपेक्षाकृत कमजोर हो गईं, इसलिए नये बने रूसी राज्य के लिए यूरोपीय देशों से बेहतर संबंध रखना उसके आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से आवश्यक हो गया था फलतः भारत के साथ रूस के संबंध तो सामान्य रहे किन्तु दोनों देश अपने आर्थिक विकास के लिए नए दोस्तों की तलाश करने लगे।

भारत रूस संबंध का इतिहास

सोवियत संघ का विघटन और रूस का उदय

सोवियत संघ के विघटन के बाद उसका सबसे बड़ा गणराज्य 'रूस' अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में सामने आया। अविभाजित सोवियत संघ की कुल जनसंख्या 28 करोड़ 70 लाख थी लेकिन नये गठित रूस की कुल जनसंख्या 14 करोड़ 77 लाख है (ज्ञात हो के सोवियत संघ की 52 प्रतिशत जनसंख्या रूसी गणराज्य में निवास करती है)। क्षेत्रफल की दृष्टि से रूस आज भी विश्व का सबसे बड़ा देश है।[1]

पूर्व सोवियत संघ की भूमि का 75 प्रतिशत भाग रूस के पास है और रूस ही पूर्व सोवियत संघ का मुख्य औद्योगिक और कृषि उत्पादक राज्य था इन दोनों क्षेत्रों में रूस की भागीदारी लगभग 70 प्रतिशत थी। सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था को पुनर्व्यवस्थित करने एवं मजबूत स्थिति में लाने के लिए रूसी गणराज्य का विशिष्ट योगदान रहा है, क्योंकि यह सर्वाधिक संसाधन सम्पन्न गणराज्य माना जाता है। सोवियत संघ के विघटन के बाद नये बने रूस को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में वही स्थान दिया गया जो पुराने सोवियत संघ का था तथा उसने वचन दिया कि पुराने सोवियत संघ के समस्त अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों का वह पूर्ण जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करेगा।

रूस की विदेश नीति

रूस की विदेश नीति के बारे में मुख्यतः दो दृष्टिकोण सामने आते हैं, जिनमे प्रथम दृष्टिकोण इस बात पर आधारित है के रूस पुराने सोवियत संघ से अलग बना एक नया गणराज्य है तो इसकी विदेश नीति भी लगभग वैसी ही रहेगी जैसी सोवियत संघ की थी, दूसरा दृष्टिकोण यह है कि आज रूस पुराने सोवियत संघ से एकदम भिन्न स्थिति में है, वह अब भोगोलिक रूप से

पूर्णतया यूरोपीय क्षेत्र में आने वाला देश हो गया है इसलिए रूसी विदेश नीति भी इसी यूरोपियन क्षेत्र के आधार पर बनेगी और शायद इसीलिए हाल के वर्षो में रूस की विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन देखे गये है।[2]

पुराने सोवियत संघ के 75 वर्ष के अस्तित्व काल के अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में और रूस के अस्तित्व में आने के बाद के अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में काफी अन्तर है। जहां पश्चिमी देश पहले सोवियत संघ की साम्यवादी व्यवस्था एवं विचारधारा को अपना शत्रु मानते थे वहीं आज वे रूस में लोकतन्त्र एवं मुक्त बाजार व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए आर्थिक सहायता देने की नीति का पालन कर रहे हैं। हाल के वर्षो में रूसी विदेश नीति की कई विशेषताएं उभरकर सामने आयी हैं: जिनमे प्रमुखतया संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग, अमरीका के साथ सामान्य सहयोगी, यूरोपीय राष्ट्रों विशेषकर जर्मनी के साथ घनिष्ट आर्थिक सम्बन्ध, नाटो के साथ शान्ति के लिए साझापन, चीन और जापान के साथ विवादों को सुलझाने की नीति और भारत के साथ घनिष्टता बढ़ाने की नीति उभरकर सामने आई है। शुरू में रूस का झुकाव पश्चिमी देशों एवं यूरोपियन देशों के साथ नये संबंध बनाने पर केन्द्रित था, लेकिन रूस को इस नई नीति से कोई ख़ास फायदा नही हुआ, अमेरिका हमेशा अपने हितों को सबसे ऊपर रखता है और यूरोप के कई देशों ने रूस के साथ वेसे संबंध विकसित नहीं किये जैसा रूस उम्मीद कर रहा था, रूस वापस अपने पुराने संबंधों की तरफ मुड़ा ताकि बदलती विश्व व्यवस्था में वो अपनी आर्थिक, राजनितिक, सामाजिक स्थिति को सुधार सके उसे सुद्रण बना सके।

रूस और भारत संबंध

भारतीय विदेश मन्त्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 1998-99 में स्पष्ट रूप से लिखा गया है के “निरन्तरता, विश्वास और परस्पर सूझबूझ पर आधारित भारत और रूस के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध दोनों देशों के लिए विदेश नीति की प्राथमिकता का महत्वपूर्ण अंग है। सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में हमारे बहुआयामी सम्बन्ध तीव्रगति से विकसित हो रहे हैं।“[3] लगभग हर वार्षिक रिपोर्ट में भारत रूस के सम्बन्धो पर महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

रूस के यूरोपियन देशों की तरफ झुकाव की वजह से तथा भारत द्वारा उदारवादी आर्थिक नीति अपनाने के पश्चात अमेरिका की तरफ बढ़ते झुकाव के कारण इन दोनों दशों के मध्य संबंधों में कुछ शिथिलता आई, किन्तु शीघ्र ही दोनों देशों को अपने एतिहासिक संबंधों का एहसास हुआ और द्विपक्षीय रिश्तों में नई ऊर्जा भरी गयी। अतः बढती वैश्विक चुनौतियों ने भारत-रूस संबंधो को और सुद्रण किया है और इस विश्वास को प्रबलता मिली के दोनों देशो को भूराजनीतिक साझेदारी के लिए एक दुसरे की आवश्यकता है।

रूस और भारत सम्बन्ध: विभिन्न घटनाक्रम

सोवियत संघ के साथ भारत के घनिष्ट सम्बन्ध थे, अत: सोवियत संघ के विघटन से भारत का चिन्तित होना स्वाभाविक था। किन्तु कुछ उतार चढाव के बाद दोनों देश आपसी संबंधो की सामरिक महत्ता को समझते हुए घनिष्ठ संबंध बनाने को अग्रसर हुए। दोनों देशो के रिश्तों के मध्य कुछ महत्वपूर्ण घटनाक्रम निम्नवत हैं,

31 जनवरी, 1991 को न्यूयार्क में रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने भारत के प्रधानमंत्री से मुलाकात की। जनवरी, 1992 में विदेश सचिव के नेतृत्व में भारतीय अधिकारियों का एक उच्चस्तरीय दल रूस और उक्रेन दिपक्षीय वार्ता के लिए गया। इस दौर में भारत ने रूस के साथ एक नई मैत्रिक और सहयोग सन्धि को अन्तिम रूप दिया।

सोवियत संघ से अलग होने के कारण नये राज्य बने रूस को आर्थिक संकट का दौर देखना पड़ा, भारत ने इस समय रूसी संघ को 15 करोड़ रुपए की राशि की मानवीय सहायता देने की पेशकश की। इस पेशकश का आशय रूसी संघ की जनता को मदद देना था जो सोवियत संघ के विघटन के कारण हुए राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के बाद बुरी तरह प्रभावित हुई थी।[4]

इस धन का उपयोग रूस ने आवश्यक वस्तुओं, जैसे बाल आहार, चावल, मानक औषधियों की आपूर्ति, के लिए किया। अप्रैल 1992 में रूसी राज्य के सचिव श्री गेन्नादी बुर्बुलिस ने भारत यात्रा के दौरान कहा कि उनका देश क्रायोजेनिक इंजनों के सम्बन्ध में भारत-सोवियत करार का सम्मान करेगा।[5]

रूसी राष्ट्रपति येल्तसिन की भारत यात्रा

जनवरी 1993 में रूस के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री बोरिस येल्तसिन ने भारत की यात्रा की। रूसी राष्ट्रपति के साथ एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मंडल भी भारत आया। इस समय भारत और रूस के मध्य कई मुद्दे ऐसे थे जिनपर एक स्टिक निर्णय करना अनिवार्य हो गया था, इनमे प्रमुख मुद्दे थे, रुपये-रूबल विनिमय दर और रूसी ऋण का पुनर्निर्धारण करना, भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए क्रायोजेनिक इंजनों की आपूर्ति इत्यादि, हालांकि अमेरिका ने इस डील पर अपना कड़ा रूख दिखाया था, लेकिन रूस और भारत ने इसकी परवाह नहीं की, दोनों देश ये समझ चुके थे के बदलती विश्व व्यवस्था में पश्चिमी देश उनका साथ नहीं देंगे।[6]

इस यात्रा से जहां रुपए-रूबल की समानता के मुद्दे का हल निकला वहीं दूसरी और रूसी राष्ट्रपति ने भारत को क्रायोजेनिक इंजनों और अन्य कल-पुर्जों की आपूर्ति का आश्वासन दिया। दोनों देशों ने मित्रता और आपसी सहयोग पर एक नये समझौते पर हस्ताक्षर किए जो पुरानी भारत-सोवियत मैत्री की आधारशिला पर रखा गया था।[7]

इस संधि को चौदह सूत्री संधि के नाम से जाना जाता है, यह संधि व्यापक रूप में पूर्व भारत-सोवियत संधि की तरह ही है, लेकिन इस संधि में सुरक्षा सम्बन्धी प्रावधान नहीं रखे गये। इन चौदह संधियों के अतिरिक्त नौ अन्य समझौतों पर भी हस्ताक्षर किये गये, जिनमे प्रमुख थे-रक्षा आपूर्ति, विज्ञान और टेक्नोलॉजी तथा आतंकवाद से निबटने और नशीली दवाओं के अवैध व्यापार की रोकथाम सम्बन्धी समझौते।[8]

श्री येल्तसिन ने अपनी इस यात्रा के दौरान हुए एक संवाददाता सम्मेलन में यह घोषणा की कि वे 'कश्मीर को भारत का अभिन्न हिस्सा मानते हैं और यह वचनबद्धता व्यक्त की कि वे संयुक्त राष्ट्र में या अन्य स्थानों पर भारत का समर्थन करेंगे एवं यह भी आश्वासन दिया के यदि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत को स्थायी सदस्य बनाने सम्बन्धी प्रस्ताव सामने आया तो वे उसके पक्ष में वोट देंगे।[9] ये पूर्ववर्ती सोवियत संघ की ही नीति को आगे बढ़ाने वाला वक्तव्य माना गया। इस यात्रा से न केवल भारत-रूस सम्बन्धों की अनावश्यक बाधाएं दूर हुईं बल्कि इससे दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सद्भाव, सहयोग और मैत्री के एक नये युग की शुरुआत हुई।

भारत और रूस के बीच मैत्री एवं सहयोग से सम्बद्ध संधि का अनुसमर्थन 11 अक्टूबर, 1993 को मास्को में हुआ एवं दोनों देशों की सरकारों के मध्य अप्रैल 1993 में रुपए-रूबल करार का भी अनुसमर्थन किया गया। यह अनुसमर्थन 11 मई, 1993 से प्रभावी हुआ। भारतीय संस्कृति विभाग के सचिव की मास्को यात्रा के दौरान वर्ष 1993-94 की अवधि के लिए एक महत्वपूर्ण भारत-रूस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम पर 16 सितम्बर, 1993 को हस्ताक्षर भी हुए।

भारतीय परिवार एवं स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय के सचिव की 12 से 18 सितम्बर, 1993 की रूस की यात्रा के दौरान चिकित्सा विज्ञान और लोक स्वास्थ्य में सहयोग से सम्बद्ध एक प्रोटोकॉल पर सहमती भी बनी। सन 1993 में ही आर्थिक क्षेत्र में भारत द्वारा रूस को 3 बिलियन रुपए 'स्विंग ऋण' और दोनों देशों के व्यवसायी तथा औद्योगिक क्षेत्रों के बीच सीधे सम्पर्क को बढ़ाना शामिल है, इससे दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में नई ऊर्जा का संचार हुआ, किन्तु इसी वर्ष भारत-रूस सम्बन्धों में एक महत्वपूर्ण घटना घटी जिसमे रूस की सरकार ने 16 जुलाई 1993 में क्रायोजेनिक इंजिन के विकास से सम्बद्ध 'इसरो' के साथ किये जनवरी 1991 में सम्पन्न करार के अन्तर्गत अपने दायित्वों को पूरा करने में असमर्थता जाहिर की। रूस ने अपना निर्णय इस आधार पर तर्कसंगत बताया के इस अनुबन्ध के कुछ अंश रॉकेट इन्जनों से सम्बद्ध प्रौद्योगिकी सामग्री तथा उपकरणों के सम्बन्ध में रूस की नए निर्यात नियन्त्रण कानून के विरुद्ध है। इस निर्णय पर भारत सरकार का खेद 17 जुलाई, 1993 को व्यक्त किया गया था।[10]

प्रधानमन्त्री पी.वी. नरसिम्हा राव की रूस यात्रा

प्रधानमन्त्री वी.पी. नरसिम्हा राव की चार दिवसीय रूस यात्रा सन 1994 में हुई। वस्तुतः दोनों देश उस दौर की नई विश्व व्यवस्था से तालमेल बैठाने की जुगत कर रहे थे। जहां भारत अमेरिका और चीन के साथ अपने मतभेदों को मिटाने के लिए प्रयासरत था वहीं दूसरी ओर रूस साइप्रस में हुए यूरोपीय संघ के सम्मेलन में हिस्सा लेने और नेपल्स में जी-7 के औद्योगिक देशों के साथ बातचीत चलाने के अलावा राजनीतिक पर्यवेक्षक की हैसियत से 'नाटो' में भी शामिल हो चुका था लेकिन भारत और रूस दोनों जानते थे के इन दोनों को को अब भी एक-दूसरे की जरूरत थी।[11] रूस को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए हथियार बेचने की जरूरत थी। रूस ने इस काल में अपने पूर्व प्रतिद्वंदी चीन को भी मिग-27 और एस यू-30 लड़ाकू विमान बेचे। इसके साथ ही रूस को इस बात का अहसास हो गया था के हिन्द महासागर और एशिया-प्रशान्त क्षेत्र में भारत रूसी हितों के लिए सन्तुलन कायम करने वाली ताकत बना रहेगा।

नरसिम्हा राव के रूसी दौरे से प्रतिरक्षा, रणनीतिक और व्यापारिक सम्बन्धों की कई बाधाएं दूर हुईं। पारस्परिक सैनिक हितों, रक्षा, व्यापार और तकनीक समेत विभिन्न क्षेत्रों में दो महत्वपूर्ण घोषणाएं और नौ समझौतों पर हस्ताक्षर भी किये गये। रक्षा क्षेत्र में भारत को रूस से 83 करोड़ डॉलर का अनुदान मिला। इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि कल पुर्जों की आपूर्ति और रूसी विमानों की मरम्मत के लिए एक कम्पनी बनाने के संयुक्त उद्यम पर समझौता शामिल है। चालीस करोड़ रुपए की इस कम्पनी में भारतीय पक्ष की तरफ से हिदुस्तान एअरोनॉटिक्स लिमिटेड और आई.सी.आई.सी.आई का हिस्सा 53 प्रतिशत रखा गया। इसमें मास्को एयरक्राफ्ट प्रोडक्शन आर्गेनाइजेशन जैसी रूसी एजेन्सियों की भी हिस्सेदारी का प्रावधान था। इस योजना से वायु सेना को कम समय में जरूरी कल पुर्जे उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान महत्वपूर्ण था।[12]

इसके अतिरिक्त भारतीय गृहमन्त्री श्री एस.बी. चव्हाण ने 28 अगस्त से 3 सितम्बर, 1994 तक रूस की यात्रा की एवं रूस के प्रधानमन्त्री चरनोमुइरदीन दिसम्बर 1994 में भारत आए। उनकी यात्रा के दौरान लगभग आठ दस्तावेजों पर दोनों देशों ने सहमती जताई, जिनमें प्रमुख थे पूंजी निवेश का संवर्द्धन, बाह्य अन्तरिक्ष के अनुसंधान में सहयोग, वर्ष 2000 तक दीर्घकालिक रक्षा सहयोग कार्यक्रम का क्रियान्वयन इत्यादि।

भारत व रूस में आपसी सहयोग के तीन समझौतों पर भारत के विदेशमन्त्री प्रणव मुखर्जी तथा रूस के विदेशमन्त्री प्रीमाकोव ने नई दिल्ली में 30 मार्च, 1996 को हस्ताक्षर किए। इनमें से एक समझौता भारत के प्रधानमन्त्री तथा रूस के राष्ट्रपति के कार्यालय के बीच हाट लाईन स्थापित करने से सम्बंधित था। कश्मीर मुद्दे पर रूसी नेता ने कहा कि उनका देश इसे अन्तर्राष्ट्रीय मंच से उछालने के खिलाफ है, ये वक्तव्य कश्मीर पर भारत के दृष्टिकोण का समर्थन था।

भारत-रूस: सुखोई युद्धक विमान समझौता

भारत ने 30 नवम्बर, 1996 में रूस के साथ अत्यन्त विकसित किस्म के सुखोई-30 एम.के. 1 युद्ध विमानों की खरीद के दस्तावजों पर हस्ताक्षर किये। यह समझौता भारतीय रक्षा मन्त्रालय और रूसी सरकारी अस्त्र शस्त्र कम्पनी रोस्वो उरूझेनिए तथा इर्कुटस्क विमानन औद्योगिक संघ के बीच हुआ। इन विमानों के आने से भारत की वायु सेना को नई ताकत मिली। सौदे के हिसाब से भारत ने सबसे पहले चालीस विमान खरीदे जो रूस में तैयार हुए थे उस समय एक सुखोई विमान की कीमत 1 अरब रुपए थी।[13]

प्रधानमन्त्री एच.डी. देवेगौड़ा की रूस यात्रा: (मार्च 1997)

मार्च, 1997 में भारत के प्रधानमन्त्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा ने रूस की यात्रा की। इसे येल्तसिन-देवेगौड़ा शिखर वार्ता के नाम से जाना गया, इस शिखर वार्ता के बाद भारत और रूस ने द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए कुल छह समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इनमें प्रत्यर्पण सन्धि, दोहरे कराधान को समाप्त करने सम्बन्धी, सीमा-शुल्क सम्बन्धी मामलों में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने सम्बन्धी, परमाणु ऊर्जा संयन्त्र संरक्षण एवं विकास सम्बन्धी, आपराधिक मामलों में परस्पर कानूनी सहायता, वाणिज्य दूतावास सम्बन्धी समझौता एवं सांस्कृतिक खेल मामलों में सहयोग का समझौता शामिल है।[14] इसके साथ ही साथ रूस ने अमरीका के विरोध को नजरन्दाज करते हुए ये घोषणा की कि वह भारत में दो परमाणु रिएक्टरों के निर्माण की योजना से पीछे नहीं हटेगा और पाकिस्तान को हथियारों की बिक्री पर पाबन्दी लगाएगा।[15]

रूसी प्रधानमन्त्री प्रिमाकोव की भारत यात्रा (दिसम्बर, 1998)

रूस के प्रधानमन्त्री प्रिमाकोव ने 20 से 22 दिसम्बर, 1998 में भारत की राजकीय यात्रा की। उनकी यात्रा के दौरान दोनों देशों के सर्वोच्च नेताओं की उपस्थिति में सात द्विपक्षीय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर हुए। जिसने भारत रूस सम्बन्धों को ओर प्रगाढ़ किया।

करगिल मसले पर रूस द्वारा पाकिस्तान को चेतावनी

सन 1999 में कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के मध्य हुआ, कारगिल युद्ध पर रूस ने पाकिस्तान को चेतावनी दी और कहा कि वास्तविक नियन्त्रण रेखा बदलने के उसके किसी भी प्रयास के गम्भीर परिणाम होंगे। रूस ने पाकिस्तान को कड़ाई से कहा कि वह घुसपैठियों को वापस बुला ले इस तरह कारगिल युद्ध में रूस ने खुलकर भारत के पक्ष का समर्थन किया।[16]

विदेश मंत्री जसवन्त सिंह की रूस यात्रा

जून, 2000 की तत्कालीन भारतीय विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह की रूस यात्रा से भारत और रूस के बीच मैत्री सम्बन्ध और प्रगाढ़ हुए। राष्ट्रपति पुतिन और विदेश मन्त्री इगोर इवानोव से जसवन्त सिंह की मुलाकात और बातचीत से विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भारत और रूस के दृष्टिकोण में समानता की झलक मिली।

राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा (अक्टूबर, 2000)

रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने अक्टूबर 2000 में एकदिवसीय भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान भारत और रूस में सैन्य सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से चार महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण समझौता दोनों देशों के बीच सैन्य तकनीकी सहयोग के लिए अन्तर-सरकार आयोग का गठन को माना जाता है। इन समझौतों के अतिरिक्त तीन अन्य महत्वपूर्ण समझौते हुए जिनमे रूस द्वारा भारत को 'एडमिरल गोर्शकोव एयरक्राफ्ट कैरियर' दिए जाने, एस.यू. 30 एम.के.आई लड़ाकू विमान देने और टी-90 टैंक देने से सम्बन्धित थे। भारत ने रूस के साथ 3 अरब रुपए के रक्षा सौदे (जो स्वतन्त्रता के बाद सबसे बड़ा सौदा माना जाता था), किये जिससे भारत की प्रतिरक्षा सम्बन्धी खामियों को दूर करने में मदद मिली।

भारतीय संसद की संयुक्त बैठक को सम्बोधित करते हुए पुतिन ने कहा कि जम्मू और कश्मीर में विदेशी हस्तक्षेप बंद होना चाहिए तथा उन्होंने आतंकवाद से संघर्ष के लिए संयुक्त मोर्चा तैयार करने के भारत के प्रस्ताव का समर्थन भी किया। पुतिन ने भारत की इस मांग का समर्थन भी किया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का विस्तार किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान और अफगानिस्तान से उत्पन्न होने वाले आतंकवादी खतरे को रोकने के लिए भारत-रूस संयुक्त कार्यदल के गठन पर दोनों देशों में सहमति भी हुई।[17]

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर मास्को घोषणा पत्र (नवम्बर, 2001)

नवम्बर 2001, में भारतीय प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रूस की यात्रा की। रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन के साथ 6 नवम्बर को उनकी शिखर वार्ता हुई। इस शिखर वार्ता को मॉस्को घोषणा पत्र के नाम से जाना जाता है जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद का मुद्दा प्रमुख था। यह घोषणा-पत्र वस्तुत: कश्मीर व चेचेन्या के मामलों में क्रमश: भारत व रूस की चिन्ताओं पर केन्द्रित दस्तावेज माना जाता है जहाँ दोनों देशों ने एक दुसरे के सामरिक महत्त्व के मुद्दों को स्वीकार किया।[18]

इसके अतिरिक्त 3 से 5 दिसम्बर 2002 तक रुसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने भारत की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान रूस ने विस्तारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की सशक्त और न्यायोचित दावेदारी के प्रति रूस के पूर्ण समर्थन की पुन: पुष्टि की। इस वार्ता में कुल आठ दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए जिनमे सीमापार आतंकवाद पर भारत का दृष्टिकोण और पाकिस्तान में आतंकवाद की संरचना को ध्वस्त किए जाने का समर्थन किया।

राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा (दिसम्बर, 2004)

अपने देश के उच्चस्तरीय शिष्टमण्डल के साथ रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन 3 से 5 दिसम्बर 2004 की तीन दिवसीय भारत यात्रा पर आए। प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह से विस्तृत वार्ता के बाद आतंकवाद से अधिक एकजुट तरीके से निपटने तथा आर्थिक- व्यापारिक सहयोग बढ़ाने के सामरिक महत्व के एक संयुक्त घोषणा पत्र के अतिरिक्त आपसी सहयोग के 9 अन्य समझौतो पर दोनों देशों ने हस्ताक्षर किए। इनमें रूस के ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम के शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए भारत द्वारा उपयोग किए जाने का समझौता तथा अन्तरिक्ष, ऊर्जा, संचार व आर्थिक क्षेत्रों में सहयोग के समझौते शामिल हैं।

पुतिन-मनमोहन शिखर वार्ता (मई, 2005)

भारत के प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह दुसरे विश्वयुद्ध में नाजी जर्मनी पर गठबन्धन शक्तियों की जीत की 60वीं वर्षगांठ के समारोह में शामिल

होने के लिए तीन दिवसीय यात्रा पर 8 मई, 2005 को रूस पहुंचे। भारत के साथ अपने पुराने सम्बन्धों को मजबूती देने के लिए रूस परमाणु ऊर्जा, रक्षा और अन्तरिक्ष के क्षेत्र में उसके साथ सहयोग को ओर मजबूती देने के लिए तैयार हुआ, इसके अतिरिक्त रूस ने भारत के तारापुर संयन्त्र और नए परमाणु संयन्त्रों के लिए परमाणु ईंधन की आपूर्ति पर भी सहमति जताई।

डॉ. मनमोहन सिंह की रूस यात्रा (दिसम्बर, 2005)

भारतीय प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 5 से 7 दिसम्बर, 2005 को रूस की यात्रा की। रूस की ओर से भारत को यह भरोसा दिलाया गया कि वह भारत की असैनिक परमाणु ऊर्जा सहित तमाम ऊर्जा आवश्यकताएं पूरा करने में पूर्ण सहयोग करेगा। प्रधानमंत्री की रूस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने रक्षा, अन्तरिक्ष और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में तीन समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इनमें सबसे प्रमुख समझौता सैन्य सहयोग में बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के क्षेत्र में भारत को सहयोगी बनाने पर था। इस समझौते से रूस की रक्षा तकनीकी भारत को मिलने के मार्ग में आने वाली समस्त बाधाएं दूर हो गईं। इस सम्मेलन का दूसरा महत्वपूर्ण समझौता सुरक्षा तकनीकों के क्षेत्र में माना जाता है, इससे भारत का रूस के ग्लोबल नेवीगेशन सैटेलाइट सिस्टम, ग्लोनास में भागीदारी का रास्ता साफ हो गया।[19]

रूस से यूरेनियम आपूर्ति

मार्च, 2006 में रूस ने भारत के तारापुर संयन्त्र की दो इकाइयों के लिए 60 मीट्रिक टन यूरेनियम की आपूर्ति करने पर अपनी सहमति जताई। भारत ने रूस से यूरेनियम लेने का निर्णय कर यह संदेश दिया के भले ही भारत अमरीका से असैन्य परमाणु समझौता कर रखा है किन्तु रणनीतिक जरूरतों के लिए भारत ने अपने विकल्प खुले रखे हैं और वह पूरी तरह अमरीका पर आश्रित नहीं है।

भारत-रूस परमाणु सहयोग (जनवरी, 2007)

अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु ऊर्जा समझौते से आगे जाते हुए भारत ने कुडनकुलम में चार रिएक्टर बनाने के बारे में 25 जनवरी, 2007 को रूस से समझौता कर दोनों देशों के बीच परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण इस्तेमाल की दीर्घकालिक भागीदारी की ओर कदम बढ़ाए।

राष्ट्रपति पुतिन ने अपनी भारत यात्रा जनवरी, 2007 के दौरान कहा कि रूस असैन्य परमाणु ऊर्जा के बारे में परमाणु सामग्री आपूर्तिकर्ता देशों के समूह और अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी जैसे मैचों पर भारत का समर्थन करेगा।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि (जनवरी, 2007)

राष्ट्रपति पुतिन 26 जनवरी, 2007 में दो दिन की भारत यात्रा पर आए। भारत के 58वें गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में होने वाले राष्ट्रीय समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कुडनकुलम में परमाणु रिएक्टरों की स्थापना में रूस द्वारा सहयोग के अतिरिक्त दोनों देशों में आठ समझौतों पर हस्ताक्षर हुए।

उनमें रूस के ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम के आंकड़ों को शेयर करने व यूथसेंट नाम के उपग्रह के संयुक्त प्रक्षेपण के समझौते शामिल हैं। दो अरब डॉलर के बहुलम्बित रूपी-रूबल डेब्ट एग्रीमेंट को सुलझाने के लिए भी दोनों देशों में समझौता हुआ। दोनों पक्षों ने 2010 तक द्विपक्षीय व्यापार को 10 अरब डॉलर तक करने के लिए कार्य योजना निर्धारित करने की भी सहमति प्रदान की।

डॉ. मनमोहन सिंह की रूस यात्रा (नवम्बर 2007)

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 11-12 नवम्बर, 2007 तक मास्को की आधिकारिक यात्रा पर मास्को गये। इस यात्रा के दौरान अनेक दस्तावेजों

पर हस्ताक्षर हुए जिनमें स्वापक पदार्थों, मन: प्रभावी पदार्थों और इनके निर्माण में सहयोगी पदार्थों के अवैध व्यापार का सामना करने में सहयोग सम्बन्धी करार तथा भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन और रूसी परिसंघ की फेडरल स्पेस एजेंसी के बीच करार प्रमुख हैं। इससे पूर्व भारत और रूस ने 24 से 27 अप्रैल, 2007 में जापान सागर में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास किया और रूस के स्कोव क्षेत्र में 11 से 20 सितम्बर, 2007 तक भारतीय थलसेना एवं वायुसेना तथा रूसी वायुसेना की संयुक्त भागीदारी में आतंकवाद विरोधी अभ्यास किया गया।[20]

राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव की भारत-यात्रा (दिसम्बर, 2008)

रूसी महासंघ के राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव वार्षिक शिखर वार्ता के लिए 4 से 5 दिसम्बर, 2008 को भारत के राजकीय दौरे पर आये। उन्होंने भारत में 'रूस वर्ष' के समापन समारोह में हिस्सा लिया तथा दौरे के दौरान 9 अन्य प्रमुख दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए गए, इसके रूस भारत में अतिरिक्त नाभिकीय विद्युत संयंत्र इकाइयों के निर्माण में मदद को भी तैयार हुआ एवं इससे सम्बंधित समझौते पर भी हस्ताक्षर हुए। भारत में वर्ष 2008 में 'रूसी वर्ष' के दौरान संस्कृति, अर्थव्यवस्था व विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में 140 समारोह आयोजित किए गए।[21]

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की रूस यात्रा (दिसम्बर, 2009)

7 दिसम्बर, 2009 को भारत के प्रधानमंत्री मास्को पहुंचे। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और रूसी राष्ट्रपति दमित्रि मेदवेदेव ने जिन समझौतों पर दस्तखत किए उनमें सबसे महत्वपूर्ण परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए आपसी सहयोग का समझौता माना जाता है।

रूस ने वादा किया कि वह हमेशा भारत को परमाणु ईंधन देता रहेगा, तब भी जब ये दोतरफा समझौता खत्म हो जाता है। इसका मतलब है कि भारत को इस समझौते के परिशोधन और संवर्धन का अधिकार होगा। इस लिहाज से यह समझौता भारत के लिए भारत-अमेरिका परमाणु करार से भी ज्यादा लाभदायक एवं प्रासंगिक है। रूस का लाभ इस बात में है कि भारत परमाणु ऊर्जा और सैन्य उपकरणों का एक बड़ा खरीदार है जिसका बड़ा हिस्मा उसे मिल सकता है। सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत की अमेरिका से नजदीकी ने रूस को परेशान किया था, इस समझौते से दोनों देशो के मध्य नये सिरे से आपसी सम्बन्धों की शुरुआत हुई और परस्पर सहयोग एवं विश्वास की भावना भी बढ़ी।[22]

रूस के राष्ट्रपति मेदवेदेव की भारत यात्रा (दिसम्बर, 2010)

रूस के राष्ट्रपति ने 21 से 22 दिसम्बर, 2010 को भारत की यात्रा की। यात्रा के अन्त में जारी संयुक्त घोषणापत्र का शीर्षक है- "रूस-भारत की रणनीतिक साझेदारी के एक दशक पर उत्साह मनाना तथा अग्रिम दृष्टि।" जो दोनों देशों के रिश्तों के लिए काफी महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

घोषणा पत्र के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं:

1. दोनों देशों के द्विपक्षीय व्यापार को 2015 तक बढ़ाकर 20 बिलियन डॉलर तक पहुंचाना।
2. ऊर्जा के क्षेत्र में परस्पर लाभदायक सहयोग; रूस ने भारत के कुडनकुलम में परमाणु संयन्त्र की दो इकाइयों को शीघ्र पूरा करने तथा वहीं पर दो नई इकाइयों की स्थापना पर विचार-विमर्श किया। ऊर्जा के क्षेत्र में सबसे मृहत्वपूर्ण समझौता भारत की तेल कम्पनी ओ.एन.जी.सी. तथा रूसी कम्पनी सिस्टेमा के बीच सम्पन्न हुआ, इसके अन्तर्गत तेल व गैस

उत्पादन के क्षेत्र में संयुक्त प्रोजेक्ट चलाना शामिल है।

3. दोनों देशों ने भारत में पांचवीं पीढ़ी के युद्धक विमानों के उत्पादन हेतु एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके अन्तर्गत 200 से 250 विमानों का निर्माण किया जायेगा तथा उन्हें तीसरी दुनिया के देशों को बेचा जायेगा।
4. रूस के सहयोग से भारत में एक संयुक्त विज्ञान व तकनीकी केन्द्र की स्थापना करना जिसके द्वारा नई तकनीकों को विकसित करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाएगा। इससे दोनों देशों को लाभ पहुचेगा।[23]

प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह की रूस यात्रा (दिसम्बर, 2011)

भारत के प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह ने दिसम्बर 2011 में रूस की यात्रा की। रूस के राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव से बातचीत के बाद संयुक्त पत्रकार वार्ता में प्रधानमंत्री डॉ. सिंह ने कहा कि रुसी सहयोग से भारत में बने कुडनकुलम परमाणु संयन्त्र की 'पहली और दूसरी यूनिट का काम काफी आगे बढ़ चुका है। पहली यूनिट कुछ सप्ताह में और इसके छह महीने बाद दूसरी यूनिट भी काम करना शुरू कर देगी।

भारत में संयन्त्र की सुरक्षा चिन्ताओं को लेकर कई नागरिक समाज संगठन आन्दोलन कर रहे थे इस पर डॉ मनमोहन सिंह ने कहा कि, 'हमें यकीन है कि हम सभी समस्याओं एवं बढाओ से पार पा लेंगे।' इस बयान के बावजूद भारत व रूस ने संयन्त्र की तीसरी-चौथी यूनिट के लिए समझौता नहीं किया। इसी समय दोनों देशो के मध्य रक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग के पांच समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इन्हीं में से एक समझौते के अन्तर्गत रूस ने बयालीस सुखोई-30 विमान तथा एम.के.आई लड़ाकू विमानों के उत्पादन में भारत को तकनीकी सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त रूस ने 'नेरपा' परमाणु पनडुब्बी' दस वर्ष के पट्टे पर भारत को देने के लिए तैयार हुआ। यह पनडुब्बी पानी के अन्दर महीनों तक रहने में सक्षम है। भारत में इसे 'आईएनएस चक्र' नाम दिया गया।[24]

भारत-रूस के मध्य मधुर संबंध एवं रणनीतिक भागीदारी दोनों राष्ट्रों के लिए हमेशा से ही सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय रही है, यह भागीदारी पारस्परिक लाभ, वैश्विक शान्ति व स्थायित्व के महत्व पर आधारित है।

20 से 22 अक्टूबर, 2013 तक मॉस्को में आयोजित 14वीं वार्षिक भारत-रूस शिखरवार्ता द्विपक्षीय आदान-प्रदान को एक नई ऊंचाई देने वाली साबित हुई। इस वार्ता में अनेक द्विपक्षीय दस्तावेजों पर दोनों देशो द्वारा हस्ताक्षर किए गए। प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह डरबन में पांचवीं ब्रिक्स शिखरवार्ता (मार्च, 2013) के समय राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन से मिले उसके बाद सेंट पीटर्सबर्ग में जी-20 शिखरवार्ता (सितम्बर, 2013) के दौरान दोनों नेताओ के मध्य संक्षिप्त चर्चा हुई। अगले साल नई सरकार आने के बाद जुलाई, 2014 में छठी ब्रिक्स शिखर वार्ता के दौरान भारत के नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन से संक्षिप्त वार्ता हुई।

राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा (दिसम्बर, 2014)

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के निमन्त्रण पर रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने 11 दिसम्बर, 2014 को दोनों देशों की 15वीं शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारत की सरकारी यात्रा की। राष्ट्रपति पुतिन क्रीमिया के प्रधानमन्त्री सर्गे अक्षेनोव के साथ भारत आये। यद्दपि पुतिन लगभग चौबीस घण्टे ही भारत में रुके परन्तु दोनों देशों के बीच बीस समझौते हुए। इस सम्मेलन में रूस ने पहली बार रक्षा प्रौद्योगिकी और रक्षा उद्द्योग के क्षेत्र में संयुक्त रूप से उत्पादन के

लिए अपनी सहमती दिखाई। इसके अतिरिक्त दोनों देश विज्ञान और प्रौद्योगिकी, उद्योग, उपकरणों, यूरेनियम खनन, परमाणु ईंधन की आपूर्ति, उपयोग किए गए ईंधन के प्रबन्धन और परमाणु ईंधन के चक्र के अन्य पहलुओं में सहयोग का विस्तार करने के लिए राजी हुए।[25] भारत और रूस नवीकरणीय ऊर्जा के विकास और उसके कुशल उपयोग में भी एक दुसरे को सहयोग करेंगे। दोनों देशों द्वारा जारी किये गये संयुक्त वक्तव्य में सुरक्षा परिषद् की उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए एवं उसे अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण और कारगर बनाने के लिए ठोस कदम उठाने का संकल्प दोहराया।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की रूस यात्रा (दिसम्बर, 2015)

भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की भारत-रूस 16वीं वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए रूस यात्रा के दौरान (23-24 दिसम्बर, 2015) दोनों देशों के बीच परमाणु और रक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने के लिए कुल 16 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। भारत में मेक इन india के अंतर्गत कामोव 226 हैलीकॉप्टर बनाने पर एक समझौता हुआ, जिसमें भारत की स्थानीय कम्पनियों की सहभागिता सुनिश्चित की गई। दोनों देशो ने संयुक्त बयान जारी कर कहा कि भारत और रूस अगले दो दशकों में संयुक्त सहयोग से भारत में 12 परमाणु रिएक्टर बनायेंगे।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य क्षेत्रों में हुए प्रमुख समझौते हैं जो दोनों देशों के सामरिक महत्व को ओर प्रबल करते हैं, उदहारणस्वरुप दोनों देशों के नागरिकों और राजनयिक पासपोर्ट रखने वालों व्यक्तियों की आवाजाही के लिए कुछ श्रेणियों में नियम कायदों को सरल बनाया गया है, कस्टम मामलों एवं रेलवे सेक्टर में तकनीकी सहयोग पर बल दिया गया, भारत में सौर ऊर्जा प्लांट लगाने और ब्रॉडकास्टिंग के क्षेत्र में सहयोग पर एमओयू (Memorandum of Understanding) और रूस में तेल खनन को लेकर भी महत्वपूर्ण समझौता हुआ।[26]

क्या भारत और रूस के मध्य संबंध दरक रहे हैं? भारत रूस संबंध की वर्तमान स्थिति

इस विवाद को समझने के लिए रूस के अतिरिक्त चीन और पाकिस्तान कि स्थिति एवं महत्ता को समझना अनिवार्य है।

चीन

हाल के वर्षो में चीन भारत के लिए कोई ना कोई चिंता की स्थिति उत्पन्न कर रहा है। दोनों देश आपस में विवादित सीमारेखा साझा करते हैं, और चीन अरुणाचल प्रदेश, नार्थ ईस्ट के कुछ राज्यों पर अपना दावा रखता है, इसके अतिरिक्त भारत का एक बड़ा भू भाग चीन के कब्जे में है, कुल मिलाकर भारत और चीन के मध्य सीमा विवाद काफी पुराना है और समय समय पर चीन भारत के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न करता रहता है। अभी हाल में हुआ डोकलाम विवाद एक बड़े सैनिक संघर्ष में बदलने से रह गया। इसके अतिरिक्त चीन का पाकिस्तान में लगातार बढ़ता निवेश एवं पकिस्तान को समर्थन भारत के लिए सरदर्द का कारण बनता जा रहा है। चीन आज भारत से लगभग चार गुनी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और उसका रक्षा बजट भी भारत से लगभग तीन गुना ज़्यादा है। हालाकिं चीन और भारत के बीच एक मज़बूत आर्थिक संबंध हैं पर ये सम्बन्ध संदेह से भरे हुए हैं। भारत में समय समय पर चीनी सामानों के बहिष्कार की वकालत की जाती है, किन्तु चीनी सामानों का पूर्णतया बहिष्कार सम्भव नहीं है, ये तथ्य चीन और भारत के आर्थिक संबंधों को बयान करते हैं।

इसी बीच पिछले कुछ वर्षों में भारत और अमेरिका एक दूसरे के करीब आये हैं। अमेरिका

भारत के लिए सुरक्षा परिषद और और न्युक्लीअर सप्लायर ग्रुप(एनएसजी) में पूर्ण सदस्यता की वकालत करता रहा है, लेकिन चीन हर तरीके से इस सदस्यता का विरोध करता आया है।
वही दूसरी तरफ रूस धीरे धीरे चीन के नजदीक जा रहा है और चीन-रूस के मज़बूत होते संबंध भारत के लिए सामरिक दृष्टिकोण से अच्छे संकेत नहीं हैं।

रूस की पाकिस्तान से बढ़ती करीबी

शीत युद्ध में प्रतिद्वंदी रहे रूस और पाकिस्तान के बीच जो दूरियाँ थी, (जिसमें अमेरिका का पाकिस्तान को समर्थन प्रमुख कारण था), आज वो दूरियाँ कम होती दिख रही हैं। इसी वर्ष (अक्टूबर 2018) पाकिस्तान के विदेश मंत्री ख्वाजा आसिफ़ ने रूस के विदेश मंत्री के निमंत्रण पर चार दिवसीय दौरा किया। इस घटनाक्रम को ज़ाहिर तौर पर भारत सरकार ने सकारात्मक रूप से नहीं देखा। इसके अतिरिक्त सन 2015 में पहली बार रूस ने पाकिस्तान से सैन्य करार के अंतर्गत चार उन्नत रुसी लड़ाकू हेलिकॉप्टर MI-35 बेचे और दोनों देशों के बीच सैन्य अभ्यास को लेकर भी समझौता हुआ। भारत के लिए बड़ी चिंता की बात जहाँ उसका एक पुराना भरोसमंद सहयोगी, मित्र देश उसके शत्रु माने जाने वाले देशों के नजदीक जा रहा है।[27]

रूस की भारत से बढ़ती दूरियां एवं सुझाव

जहाँ रूस ने पाकिस्तान और चीन के साथ अपने संबंध मज़बूत किये हैं वहीं दूसरी तरफ़ भारत हाल के कुछ वर्षो में नये मित्रों की तलाश में है जिनमे अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, इजराइल इत्यादि प्रमुख हैं। भारत ने इन देशो के साथ मिलकर भारतीय महासागर और प्रशांत क्षेत्र में अपनी मौजूदगी बढ़ाई है। भारतीय प्रधानमंत्री भी इन देशों में कई बार जा चुके हैं ताकि एक सशक्त मित्र बनाया जा सके और रूस पर हथियारों एवं तकनीकी निर्भरता को भी कम किया जा सके। फ्रांस के साथ राफेल विमान का सौदा एवं कुछ पनडुब्बियों का खरीदा जाना भारत की इसी नीति का परिणाम है। दूसरी तरफ भारत ने जापान के साथ बेहद मज़बूत संबंध बना लिए हैं, ये इस बात का संकेत है के भारत अमरीका के नेतृत्व वाले गठबंधन की तरफ़ झुका है और रूस से दूरियाँ बढ़ रही हैं। उधर रूस भी अफगानिस्तान की सामरिक महत्ता की वजह से पाकिस्तान की तरफ झुका है और उसे भी हथियारों एवं रुसी तकनीक खरीदने वाला एक नया देश मिल रहा है, अमेरिका की पाकिस्तान से बढती दूरियाँ भी पाकिस्तान एवं रूस को नजदीक ला रहीं हैं।
इन सबके बावजूद 2012 से 2016 के बीच भारत का 68 प्रतिशत व्यापार रूस से किया गया जो अमरीका के साथ किये 14 प्रतिशत और इसराइल के 8 प्रतिशत से कहीं ज़्यादा है। भारत को रूस के साथ दोस्ती से कई बड़े एवं महत्वपूर्ण लाभ हुए हैं, जिनमें परमाणु पनडुब्बी की सप्लाई हो, ब्रह्मोस जैसी उन्नत तकनीक की मिसाइल का साझा विकास इत्यादि। रूस भारत के साथ हर मुश्किल दौर में खड़ा भी रहा है और रूस को भी भारत जैसा बड़ा हथियारों का बाजार खोने से नुक्सान होगा। भारत रूस से अभी भी दोगुनी बड़ी अर्थव्यवस्था है और रूस खुद भारत जैसे खरीदार को खोना नहीं चाहेगा खासतोर से उस दौर में जब आत्मनिर्भर होता चीन रूस से हथियारों का आयात कम कर रहा है और कच्चे तेल के अतर्राष्ट्रीय बाजार में गिरते दाम रूस की आर्थिक स्थिति के लिए अच्छे संकेत नहीं दे रहे। वहीं दूसरी ओर भारत अपने नये मित्रों पर संकट की घड़ी में समर्थन का भरोसा नही कर सकता, रूस आज भी भारत के साथ ज्यादा मजबूती से खड़ा नजर आता है। अतः दोनों देशों को अपने इतिहास को देखते हुए एक साथ खड़े रहने की जरूरत है, आपसी विश्वास को और मजबूत करने की जरूरत है।

संदर्भ

1. Panorama of Russia, “Russian Federation”, *UNESCO*. Accessed Via: http://www.unesco.ru/en/?module=pages&action=view&id=1. Dated: 12/09/2020.
2. Lo Bobo. *Russian Foreign Policy in Post-Soviet Era: Reality, Illusion and Mythmaking* (London: Palgrave. Macmillan), 2000, 12-39.
3. MEA Library. “Annual Reports: Ministry of External Affairs, Government of India, 1999-98. Accessed Via: https://mealib.nic.in/?1562?000. Dated. 18/9/2020.
4. Gidadhubli RG. “India-Russia Economic Relations: Issues and Prospects,” *Economic and Political Weekly*,1999:34(20):1215-1219.
5. Summary of World Broadcast, 1992. SU/1379. A3/3.
6. Verma SN. "Russia and India: From Hiatus to Resurrection", *Strategic Analysis*,1995:8(4):573. see also, Hazarika, Sanjoy (1993), “Despite US, Yeltsin Backs Rocket deal with India,”*The New York Times* (January. 30. 1993). Accessed Via: https://www.nytimes.com/1993/01/30/world/despite-us-yeltsin-backs-rocket-deal-with-india.html. Dated. 27/9/2020.
7. Ibid
8. Ibid
9. Ibid
10. Ibid
11. Dasgupta Sunil. “Narasimha Rao’s Visit to Russia Removes Bottlenecks in Defence, Strategic and Trade Ties,” *India Today* (July 31). Accessed Via: https://www.indiatoday.in/magazine/special-report/story/19940731-narasimha-raos-visit-to-russia-removes-bottlenecks-in-defence-strategic-and-trade-ties-809444-1994-07-31. Dated. 10.10. 2020.
12. Ibid
13. *The Hindu.* “The Sukhoi Deal and After,” Saturday, 2000. Accessed Via: https://www.thehindu.com/thehindu/2000/12/30/stories/05302511.htm. Dated. 12.10.2020.
14. Russia Promises not to supply arms to Pakistan”, *Rediff on the Net*. Accessed Via: http://www.rediff.com/news/mar/27russia.htm. Dated. 13.10.2020.
15. Ibid
16. Clary Christopher. “What might an India-Pakistan War look Like? *MIT Centre for International Studies* (Spring), 2012. Accessed Via: https://cis.mit.edu/publications/newsletter/what-might-india-pakistan-war-look. Dated. 16.10.2020.
17. Bindra, Satinder. “Defense to Dominate Putin’s Indian Tour,” *CNN.COM* (October. 2), 2000. Accessed Via: http://edition.cnn.com/2000/ASIANOW/south/10/02/putin.india/index.html. Dated. 19.10.2020.
18. Basu, Baidya Bikash. “Business as Usual: Prime Minister Vajpayee’s Visit to Russia, *“Strategic Analysis*,2002:26(1):164-69.
19. “India-Russia Joint Statement on the outcome of the Official Visit of Prime Minister Dr. Manmohan Singh to the Russian Federation, 2005. *Ministry of External Affairs: Government of India* (December 5). Accessed Via: https://mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/7105/IndiaRussia+Joint+Statement+on+the+outcome+of+the+Official+Visit+of+Prime+Minister+Dr+Manmohan+Singh+to+the+Russian+Federation. Dated. 24.10.2020.
20. “On the visit of Prime Minister to Russia (11-12 November, 2007),” *Ministry of External Affairs. Government of India*, 2007. Accessed Via: https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/3535/On+the+visit+of+Prime+Minister+to+Russia+1112+November+2007. Dated. 25.10.2020.
21. Mohanty, Arun. “Medvedev Visit to India: A Significant Indo-Russia Summit,” *Mainstream Weekly*,2008:40:7(1). Accessed Via: https://mainstreamweekly.net/article1090.html. Dated. 27.10.2020.
22. Mohanty, Arun. “Indo-Russian Strategic Partnership Enters New Stage,” *Mainstream*,2009:40(7):52. Accessed Via: http://www.mainstreamweekly.net/article1834.html. Dated. 29.10.2020.
23. Kaul, Ajay. “Manmohan, Medvedev Discuss Indo-Russian Ties, Global Situation,” *LiveMint* (Wednesday: April. 2011), 2011. Accessed Via: https://www.livemint.com/Politics/dnPZD9MjhzASFO68TiEkkJ/Manmohan-Medvedev-discuss-IndoRussia-ties-global-situatio.html. Dated. 30.10.2020.
24. The Summary of Manmohan Singh’s 3-Day Visit to Russia *Russia Beyond* (December 2011), 2011. Accessed Via: https://www.rbth.com/articles/2011/12/19/the_summary_of_manmohan_singhs_3-day_visit_to_russia_14034. Dated. 2.11.2020.

25. "Joint Statement on the Visit of Russian President Vladimir Putin to India: Full Text, 2014. *NDTV*. (December 11). Accessed Via: https://www.ndtv.com/india-news/joint-statement-on-the-visit-of-russian-president-vladimir-putin-to-india-full-text-711688. Dated. 5.11.2020.
26. Pandey, Surabhi. "India-Russia Joint Statement After PM Narendra Modi Meets President Vladimir Putin," *NDTV* (October 15), 2016. Accessed Via: https://www.ndtv.com/india-news/full-text-india-russia-joint-statement-after-pm-narendra-modi-meets-president-vladimir-putin-1474578.Dated. 5.11.2020.
27. Kakkar, Harsh. "Is Russia-China-Pak Axis Becoming a Reality," *Observer Researcher Foundation* (April.4), 2018. Accessed Via: https://www.orfonline.org/expert-speak/is-russia-china-pak-axis-becoming-a-reality/. Dated. 3.11.2020.